सौ वराके हिकडी, गाल ईं आइए।
मूंजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआं थीं तोहिजे चाइए।।५२ ।।

सौ बात की एक बात यहां अब हो गई कि खेल में मेरा जरा भी नहीं चलता। यह भी मैं जो कहती हूं, आपके कहलाने से कहती हूं।

तूं बंधे तूं छुडाइए, तित बी काएं न गाल।
जीं फिराइए तीं फिरे, कौल फैल जे हाल।।५३ ।।

आप ही बांधते हैं, आप ही छुड़ाते हैं। दूसरे किसी की बात ही नहीं है। अब आप जैसा घुमाएं वैसा ही हमारी कहनी, करनी और रहनी घूम जाए।

हांणे मोंह थीं मंगां मूं धणी, मूंजा सुणज सभ स्वाल।
महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल।।५४ ।।

महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे धनी! मेरी प्रार्थना सुनिए। मैं अपने मुंह से मांगती हूं कि मेरे लाड़-प्यार को आप पूर्ण करें।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ४३७ ।।

आसिकजा गुनाह

सुणो रूहें अर्स जी, जा पांणमें वीती आए।
जेहेडी लटी पांण केई, एहेडी करे न बी कांए।। १ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मेरे धाम की रूहो! सुनो, जो हम पर बीती है, हमने जैसा उलटा काम किया है, ऐसा उलटा कोई नहीं करता।

चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई।
डिठम से सहूर से, सहूर आंईं पण करेजा सेई।। २ ।।

मैं उसका विवरण बताती हूं। ध्यान देकर सुनना। फिर तुम भी उसे ध्यान से देखना, जैसे मैंने देखा है।

पोए जा दिल अचे पांहिजे, पांण करियूं सेई।
भुली रोए तेहेकीक, हथड़ा मथे डेई।। ३ ।।

पीछे आपके दिल में जो आएगा वह करेंगे। जो गल्ती करती है उसे ही सिर पर हाथ मार कर रोना पड़ता है।

ते लाएं कीं भूल जे, आए हथ अवसर।
पोए को पछताए जे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर।। ४ ।।

इसलिए हाथ में आए समय को क्यों भूलें? पहले से ही नजर खोलकर चलें, ताकि पीछे पछताना न पड़े।

गिरो पांहिजी आसिक, चांऊं मंझ हिंनी।
जा पर पसां पांहिजी, त असां हे अकल के डिंनी।। ५ ।।

यहां माया के संसार में अपनी जमात आशिक कहलाती है। फिर जब मैं अपनी तरफ देखती हूं तो सोचती हूं कि हमको यह अक्ल किसने दी?

Nijanand App

खबर गिंनी धणीयजी, डिंनी लोकन के।
आसिक के हे उलटी, पांण के लगी जे।। ६ ।।

धनी की खबर पाकर दुनियां को बताना। आशिक के लिए उलटी बात है, जो दोष अपने को लगा है।

मिठो गुझ मासूक जो, आसिक के के न चोए।
पडोसन पण न सुणे, ईं आसिक गुझी रोए।। ७ ।।

अपने माशूक की छिपी बातें आशिक रूहें किसी को नहीं कहतीं। आशिक रूहें घर में छुपकर रोती हैं, ताकि पड़ोसन तक न सुन सके।

आसिक चोंजे तिनके, थिए पिरी उतां कुरबान।
सए भते मासूक जा, सुख गुझां गिंने पांण।। ८ ।।

आशिक उसे कहते हैं जो प्रीतम पर कुर्बान हो जाए और हर तरह से अपने माशूक का एकांत में सुख ले।

जे कोडी पोन कसाला, त करे न के के जांण।
गिंनी कायम सुख धणीयजा, बोले ना के सांण।। ९ ।।

जो करोड़ कष्ट आएं, तो भी वह किसी को नहीं बतलाती। वह अपने धनी के अखण्ड सुख प्राप्त करने पर किसी से नहीं कहती।

गिंनी गुझां सुख पिरनजा, रहे मंझ सैयन।
पांण गुझ मासूक जो, न बुझाए बियन।। १० ।।

अपने प्रीतम के छिपे सुखों को लेती हैं और सहेलियों में रहती हैं। फिर भी प्रीतम को छिपी बातें सहेलियों को नहीं बतातीं।

तिंनी के पण न चोए, जे हिन सुखज्यूं आईन।
त चुआं कुजाडो तिनके, जे बाहेर धांऊं पाईन।। ११ ।।

उनको भी यह बातें नहीं बतातीं जो इस सुख की लेने वाली हैं। तो फिर ऐसी सखियों को क्या कहूं, जो बाहर मैदान में जाकर चिल्लाती हैं।

मासूक कोठे पांण के, पांण भायूं हित रहूं।
गिंनी गुझ सुख मासूक जो, दुनियां के चऊं।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज हमको बुलाते हैं, परन्तु हम यहां खेल में रहना चाहते हैं। श्री राजजी महाराज के गुझ (गुह्य) सुखों को लेकर दुनियां में बताते हैं।

कडीं आसिक हेडी न करे, कांध कोठींदे पांहीं रहे।
सुख छडे बका धणीयजा, डुख कुफरमें पए।। १३ ।।

आशिक ऐसा कभी नहीं करतीं कि पति के बुलाने पर न जाएं और अपने अखण्ड सुखों को छोड़कर झूठे दुःख में पड़ी रहें।

Nijanand App

जे के वलहो होए मासूक, तेहजा वलहा लगे वैण।
से कीं डिए डुझणे, जे वलहो होए सैण।। १४ ।।

जिसको अपना प्रीतम प्यारा हो, उसे अपने प्रीतम के वचन भी प्यारे लगते हैं। जिसे अपना प्रीतम प्यारा है, वह बात अपने दुश्मनों को क्यों बतलाएगी?

आसिक कडीं न करे, हेडी अवरी गाल।
चोणों गुझ लोकन के, पाए विछोडो नूरजमाल।। १५ ।।

ऐसी उलटी बात आशिक रूहें कभी नहीं करतीं कि धनी से बिछुड़ने पर धनी की छिपी बातें दूसरों को बताती फिरें।

आसिक गुझ मासूक जो, गिंने थी रोए रोए।
डिसो उंधी अकल आसिक जी, बिंजी बियन के चोए।। १६ ।।

आशिक रूहें अपने माशूक धनी के सुखों को रो-रोकर लेती हैं। फिर देखो हम आशिक रूहों की ऐसी उलटी बुद्धि हो गई कि हम दूसरों के सामने जाकर अपने पति की बातें करती हैं।

हे निपट निवरयूं गालियूं, थिएथ्यूं पांण हथां।
जेडी थेई रांदमें पांण से, हेडी थेई न के मथां।। १७ ।।

यह निश्चित ही निर्लज्जता की बातें अपने से हो गई हैं। जैसी गलती हमसे खेल में हो गई है, ऐसी गलती आज तक किसी ने नहीं की।

आसिक चाए पांण के, हेडी करे न कोए।
कोठी न वंजे कांधजी, सा निखर भाइजा जोए।। १८ ।।

जो स्त्री (रूह) अपने को आशिक कहती है वह ऐसी गलती कभी नहीं करती। जो स्त्री अपने धनी के बुलाने पर न जाए उसे निश्चित ही अविश्वासी (बेइतबार) औरत समझो।

गुझ पिरी जो आसिक, कडी न के के चोए।
जे पोन कसाला कोडई, त वर मंझाईं रोए।। १९ ।।

अपने प्रीतम की गुझ (गुह्य) बातों को आशिक कभी किसी से नहीं कहती, यदि करोड़ों दुःख भी पड़ जाएं तो अन्दर-अन्दर ही रोती है।

हिक गुझ केयोसी पधरो, ब्यो कोठींदे न वेयूं।
हेडी हिकडी कोए न करे, से पांण हथां बए थेयूं।। २० ।।

एक तो हमने धनी की गुझ (गुह्य) बातें जाहिर कीं, दूसरे बुलाने से नहीं गई। ऐसी गलती कोई एक भी नहीं करता जो अपने हाथ से दोनों हुईं।

हेडी पांण के न घटे, पांण चायूं अर्सज्यूं।
जे सहूर करे डिठम, त हेडो जुलम करिएथ्यूं।। २१ ।।

ऐसी बात हमसे नहीं होनी चाहिए थी, क्योंकि हम परमधाम की कहलाती हैं। विचार करके देखा, तो लगता है हमसे बड़ी भारी भूल हो गई है।

Nijanand App

पांण चऊं कूडी दुनियां, ते में हेडी केई न के।
उलटयूं बेअकल्यूं, थेयूं पांण सचीय से।। २२ ।।

हम कहते हैं कि दुनियां झूठी है। इस दुनियां में कोई ऐसे नहीं करता जैसे उलटी बेअक्ली की बात हम सच्ची रूहों से हो गई है।

जडे गुणा डिठम पांहिजा, द्रिनिस घणूं हिकार।
तरसी न्हारयम हक अडां, कियम पांण पुकार।। २३ ।।

जब मैंने अपने गुनाहों की तरफ देखा तो एक बार डर गई। फिर श्री राजजी की तरफ देखकर पुकार करने लगी।

गुणा डिठम पांहिजा, धणी जा आसांन।
उमर वेई धांऊं पांईदे, जफा डिठम जांण।। २४ ।।

मैंने अपने दोष देखे और धनी के एहसान देखे। फिर चिल्लाते-चिल्लाते अपनी उम्र बिता दी और जिससे बड़ा नुकसान उठाया।

किने न केयो कडई, हेडो अधम कम।
डिसी डोह पांहिजो, फिरी करियूं कीं जुलम।। २५ ।।

आज तक ऐसा नीच काम किसी ने नहीं किया कि अपना दोष देखकर के भी गुनाह करती फिरे।

डाई जोए कीं करे, डिसी अंखिएं डोह।
जी जांणे तीं करे, मथे हुकम धणी जो।। २६ ।।

समझदार स्त्री अपने दोष आंखों से देखकर ऐसी गलती नहीं करती। धनी के हुकम पर जैसा भी हो चलती है।

पांण फिरी जा न्हारियां, त गाल थेई हथ धणी।
हित बे केहजो न हल्ले, जे करे दानाई घणी।। २७ ।।

हम दुबारा सोच-विचारकर देखते हैं तो यह बात श्री राजजी के हाथ में मालूम होती है। यहां दूसरे किसी का नहीं चलता चाहे कितनी भी चतुराई करें।

न्हारयम इलम धणीय जे, सभ हुकमें केयो ख्याल।
बिओ कोए न कितईं, रे हुकम नूरजमाल।। २८ ।।

जब धनी के इलम से देखा तो पता चला यह सब हुकम का खेल है। बिना धाम धनी के हुकम के दूसरा कोई कहीं नहीं है।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे न्हारयम दिल धरे।
हे पण गुणो खुदीय जो, जे फिरी न्हारयम सहूर करे।। २९ ।।

जब मैंने अपने गुनाहों को दिल में विचारकर देखा, तो यह भी गुनाह अपने अहंकार का पाया।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे थेयम जांण।
गुणा डिठम से पण खुदी, तरसीस पसी पांण।। ३० ।।

हमने अपने गुनाहों को देखा। जब सहूर आया, तब मैंने अपने गुनाह देखे, तो यह अहंकार का भाव भी देखकर मैं डर गई।

Nijanand App

गुणा केयम अजांणमें, गुणा डिठम मय अजांण।
दम न चुरे रे हुकम, जडे धणी पूरी डिंनी पेहेचान।। ३१ ।।

मैंने गलतियां अनजाने में की हैं। अपने गुनाहों को भी देखा तो अनजाने में ही देखा, क्योंकि जब धनी ने पूरी पहचान करा दी तो पता चला कि धनी के हुकम के बिना कुछ नहीं होता।

जांण गिडम से पण खुदी, आंऊं जुदी थियां हिनसे।
जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किए न निकरे हिनमें।। ३२ ।।

मैंने जान लिया कि 'मैं' कहना ही अहंकार है, तो इसलिए इससे दूर हो जाऊं। यह 'मैं' भी गुनाह भरा है। किसी तरह से भी यह 'मैं' अहंकार नहीं निकलता।

महामत चोए हे मोमिनों, कोई कितईं न धणी रे।
फिरी फिरी लख भेरां, न्हारयम सहूर करे।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! धनी के बिना कहीं कुछ नहीं है। मैंने फिर से लाख बार देखकर विचार कर लिया है और यही नतीजा निकाला।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ४७० ।।

खुदीजी पेहेचान

लखे भते न्हारयम, खुदी वंजे न किये केई।
हे मूर मंझा कीं निकरे, जा कांधे डेखारई बेई।। १ ।।

मैंने लाखों तरह से देखा, परन्तु यह मैखुदी (अहंभाव) किसी तरह से निकलती नहीं। यह मूल से निकले भी कैसे? धनी ने हमें अपने अतिरिक्त दूसरा कुछ दिखाया है तो यह मैखुदी (अहंभाव) माया ही है।

जे घुरां इस्क, त हित पण पसां पांण।
हे पण खुदी डिठम, जडे थेयम हक पेहेचान।। २ ।।

मैं इश्क मांगती हूं तो इसमें भी मैखुदी आ जाती है। जब श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई तो भी मैखुदी आ गई।

हक पेहेचान के के थेई, हित बिओ न कोई आए।
जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान किनको हुई? यहां कोई दूसरा है ही नहीं जो मैखुदी की बारीकियों को निकाल दे और श्री राजजी की पहचान करा दे।

तन पांहिजा अर्समें, से तां सूतां निद्रमें।
जागे थो हिक खावंद, ही निद्रडी आं दी जे।। ४ ।।

हमारे मूल तन परमधाम में फरामोशी में हैं, केवल एक श्री राजजी महाराज जागृत हैं, जिन्होंने यह माया दी है।

डेई रूहें के निद्रडी, डिखारयांई हे रांद।
हे केर डिसे थी रांद के, हित को आए हुकम रे कांध।। ५ ।।

उन्होंने रूहों को नींद देकर खेल दिखाया है। यहां पर खेल को अब कौन देख रहा है? क्या धनी के हुकम के बिना और कोई है?

Nijanand App